रम्पलस्टिल्टस्किन

एक समय की बात है कि एक गरीब
चक्की चलाने वाले की एक सुंदर बेटी थी.

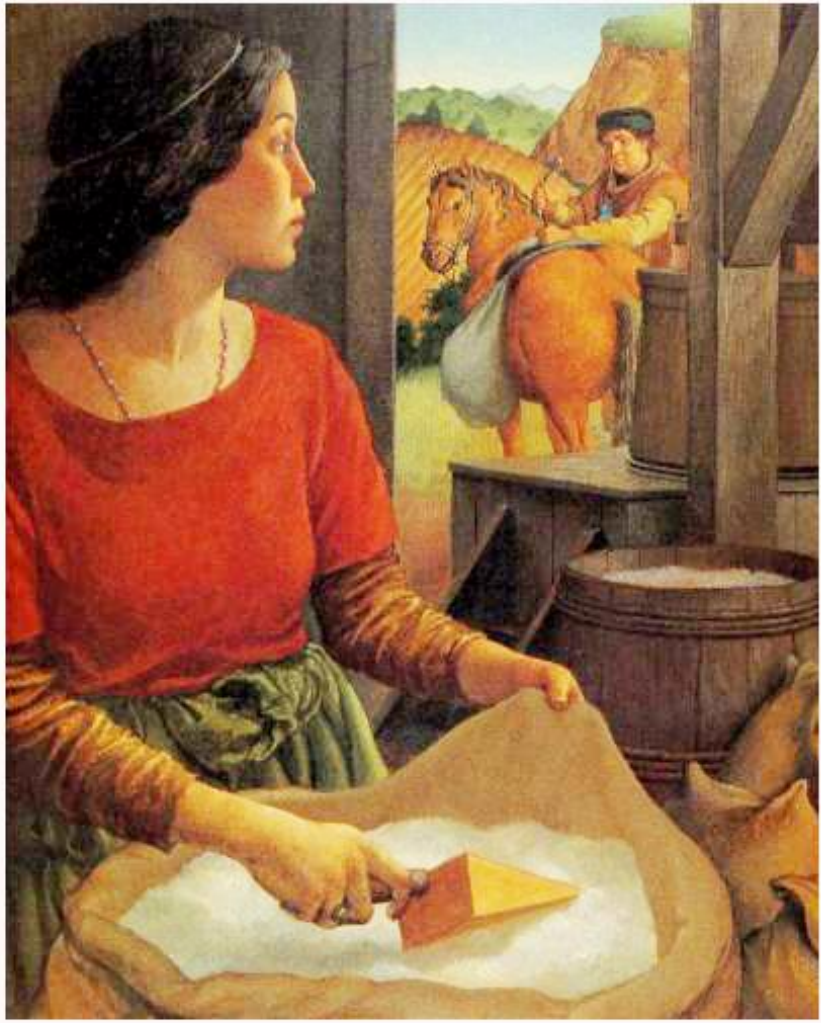

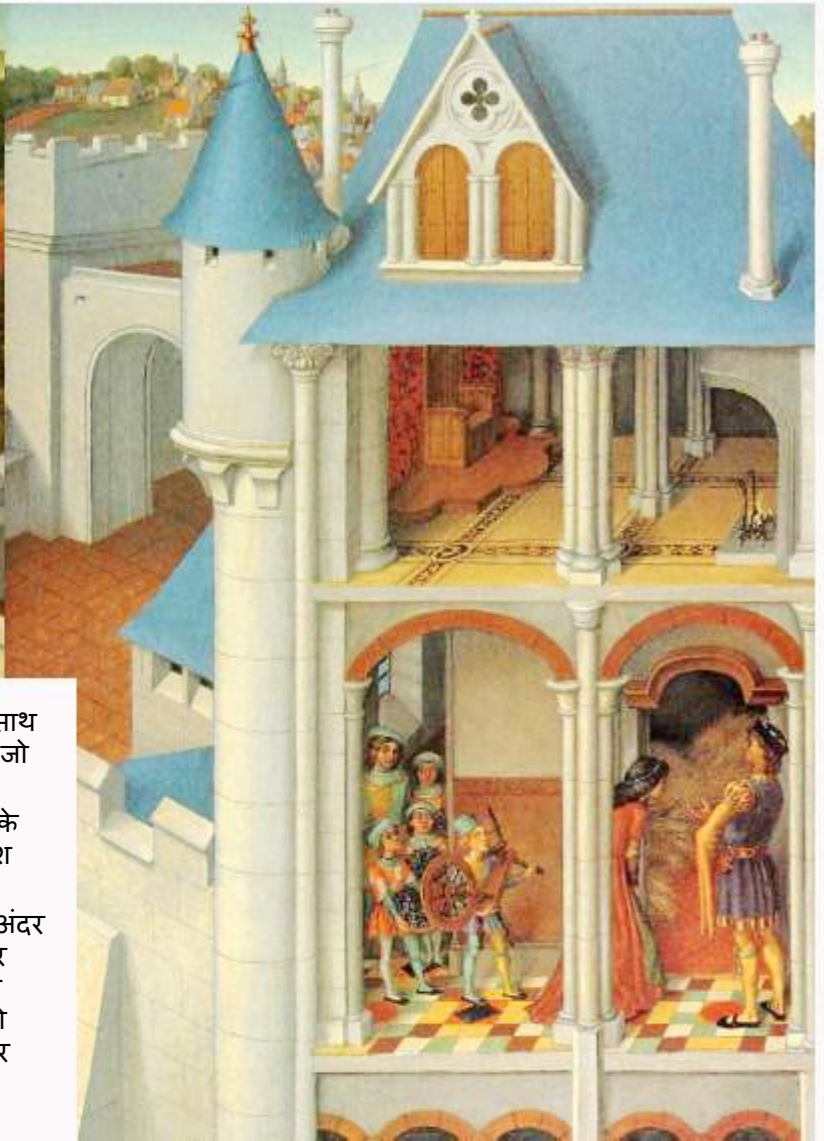

एक दिन जब वह नगर की ओर जा रहा था, उसकी भेंट राजा के साथ हुई. राजा को प्रभावित करने के विचार से उसने कहा, “मेरी एक बेटी है जो सूखी घास को कात कर सोने का बना देती है.”

अब उस राजा को सोने से बहुत प्यार था और लड़की की योग्यता के बारे में जान कर वह आश्चर्यचकित हो गया. उसने चक्की वाले को आदेश दिया कि अपनी बेटी को तुरंत राजमहल भेज दे.

जब लड़की उसके सामने उपस्थित हुई तो राजा उसे एक कमरे के अंदर ले गया जो सूखी घास से भरा हुआ था. उसने लड़की को एक चरखा और कुछ फिरकियाँ दीं और कहा, “तुम सारी रात चरखा चलाओ लेकिन अगर सुबह होने तक तुमने इस सूखी घास को कात कर सोने का न बनाया तो तुम्हें मृत्युदंड दिया जाएगा.” इतना कह कर राजा ने कमरे के दरवाज़े पर बाहर से ताला लगा दिया और लड़की को अंदर बंद कर दिया, अकेले.

गरीब चक्की वाले की बेटी कमरे के अंदर बैठी थी, उसे इस बात की बिलकुल जानकारी न थी कि सूखी घास को कात कर कोई सोना कैसे बना सकता था. उसे समझ न आया कि वह क्या करे. वह भयभीत हो गई और रोने लगी.

अचानक कमरे का दरवाज़ा खुल गया और एक बौना आदमी अंदर आ गया.

"नमस्कार, चक्की वाले की बेटी," उसने कहा. "तुम क्यों रो रही हो?"

"ओह," लड़की ने रोते हुए कहा. "इस सूखी घास को कात कर मुझे सोने का बनाना है और मुझे पता नहीं कि मैं ऐसा कैसे करूँ."

“अगर मैं इसे कात कर सोने का बना दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?” बौने ने पूछा.

“अपना कंठहार,” लड़की ने उत्तर दिया.

बौने ने उसका कंठहार ले लिया और चरखे के पास बैठ गया. उसने चरखे को तीन बार घुमाया- *वर्र!वर्र!वर्र!*- और एक फिरकी सोने के धागे से भर गई. उसने दूसरी फिरकी लगाई और फिर- *वर्र!वर्र!वर्र!*- तीन बार घुमाया और दूसरी फिरकी भी भर गई. और इसी तरह सारी रात वह चरखा घुमाता रहा और सारी सूखी घास उसने कात दी और सारी फिरकियाँ सोने के धागे से भर गईं.

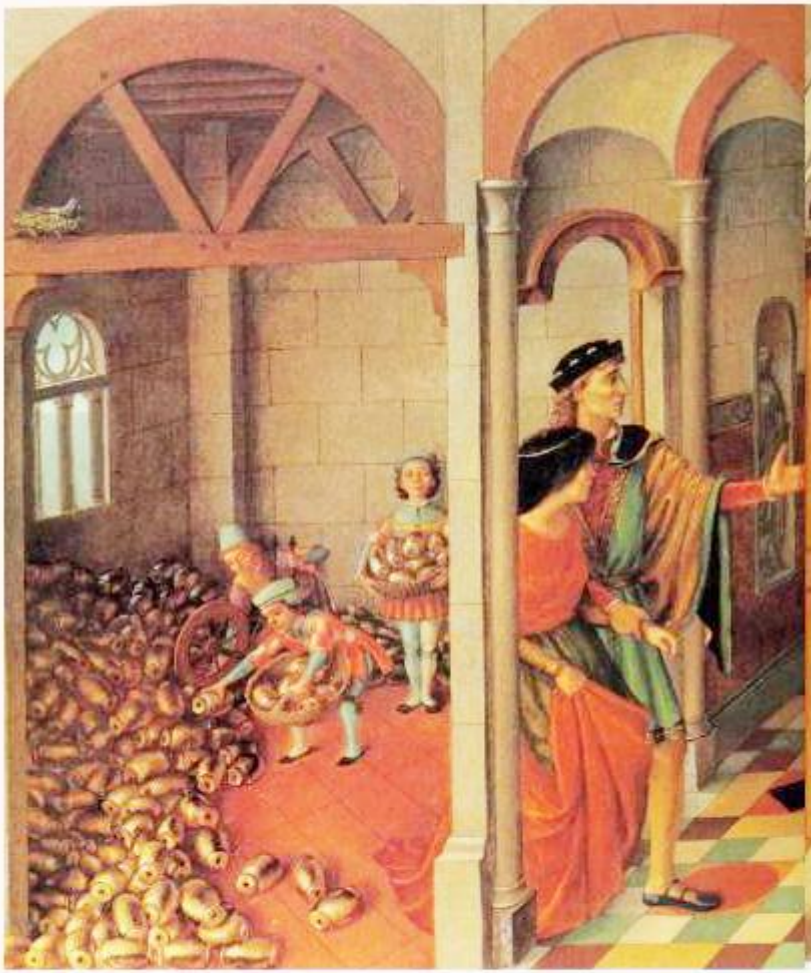

सूर्योदय के समय जब राजा आया तो वह आश्चर्यचकित और प्रसन्न हो गया. लेकिन इतना सोना देखकर वह और लालची हो गया. वह लड़की को उस कमरे से बड़े कमरे में ले गया

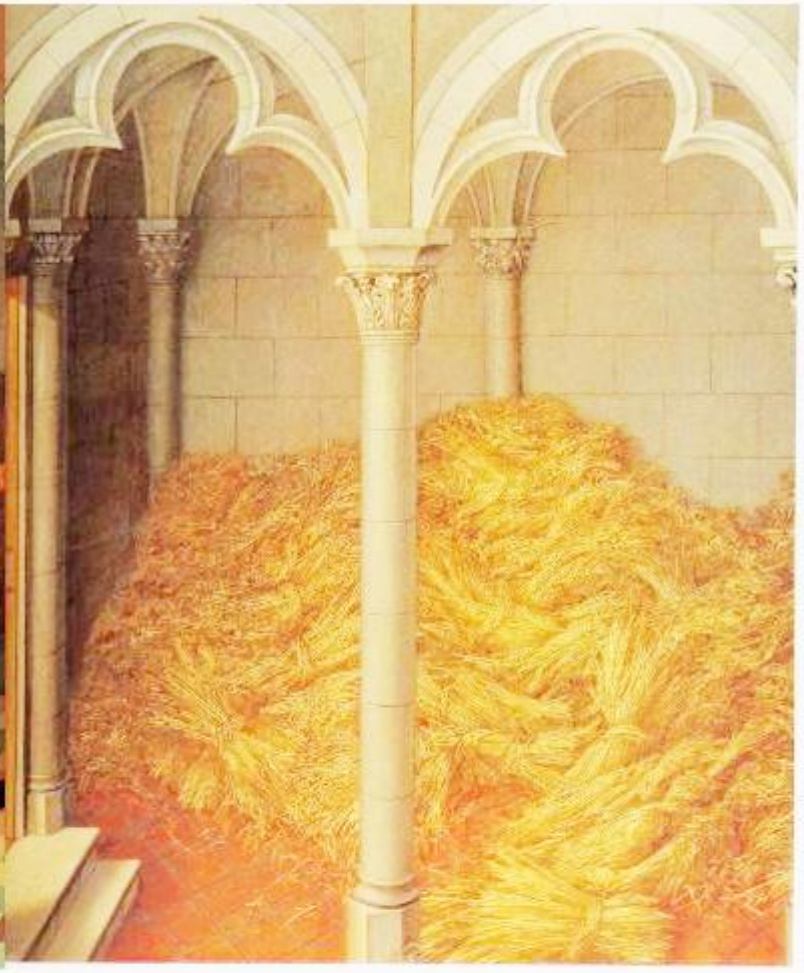

जो सूखी घास से भरा हुआ था. उसने लड़की से कहा कि अगर उसे अपना जीवन प्रिय था तो सुबह होने से पहले सारी घास को कात कर सोने का बना दे.

लड़की को समझ न आया कि वह क्या करे. इसलिए वह फिर रोने लगी. एक बार फिर दरवाज़ा खुल गया और वही बौना भीतर आ गया. “अगर मैं इस सूखी घास को कात कर सोने का बना दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?” उसने पूछा.

“ऊँगली पर पहनी यह अंगूठी,” लड़की ने उत्तर दिया. बौने ने उसकी अंगूठी ले ली और फिर वह चरखे को घुमाने लगा. रात समाप्त होने से पहले ही उसने सारी घास कात डाली और चमकदार सोना बना दिया.

सूर्योदय के कुछ देर बाद राजा आया. सोने के धागे से भरी फिरकियाँ सुबह की धूप में चमक रही थीं.

राजा चक्की वाले की बेटी को तीसरे कमरे में ले गया जो पहले दोनों कमरों से बड़ा था और जहाँ फर्श से लेकर छत तक सूखी घास के ढेर लगे थे. “आज रात भी तुम इस घास को कात कर सोने का बना देना,” राजा ने आदेश दिया. “और अगर तुम सफल हुई तो तुम मेरी रानी बनोगी.” राजा ने ऐसा कहा क्योंकि उसने सोचा कि इस लड़की से धनी पत्नी उसे सारे संसार में न मिल सकती थी.

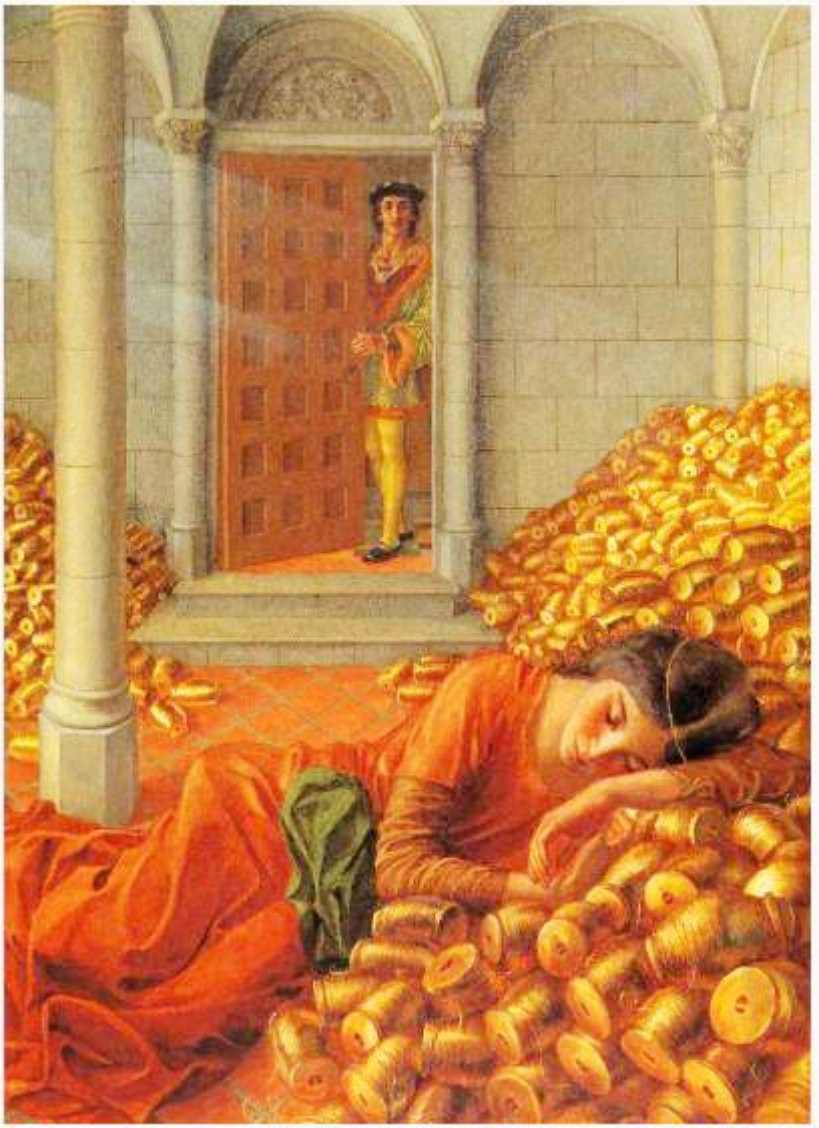

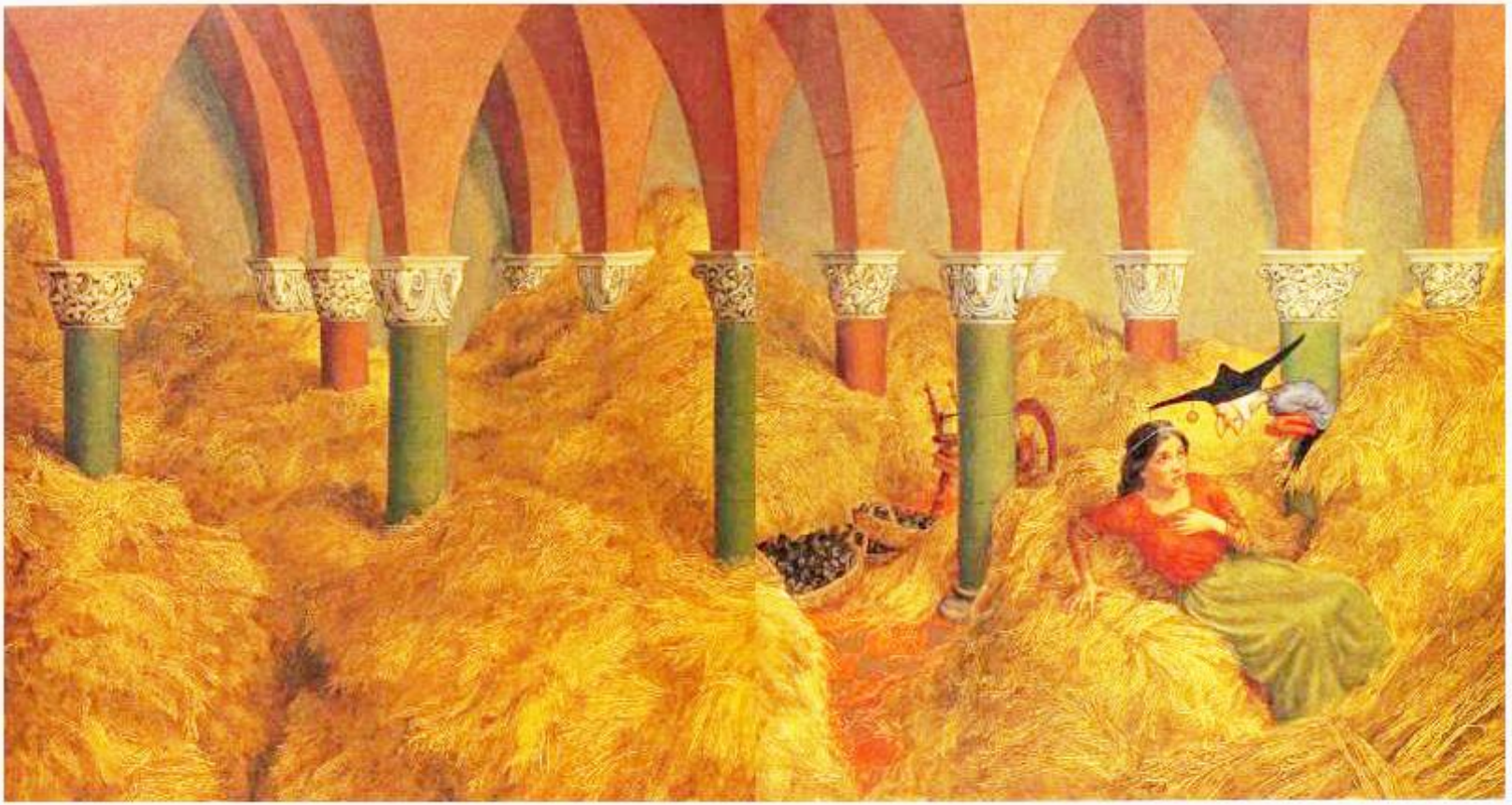

जब राजा चला गया तो बौना तीसरी बार वहाँ आया. “अगर मैं एक बार फिर तुम्हारे लिए घास कात कर सोने का बना दूँ तो तुम मुझे क्या दोगी?” बौने ने पूछा.

“अब मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं है,” लड़की ने कहा.

“फिर वचन दो कि जब तुम रानी बन जाओगी तो तुम अपना पहला शिशु मुझे दे दोगी.’

चक्की वाले की बेटी धक सी रह गई. ऐसा वचन वह कैसे दे सकती थी? फिर उसने सोचा, लेकिन कौन जानता है कि ऐसी बात होगी भी या नहीं? और चूँकि मृत्यु से बचने का उसे कोई और उपाय न सूझ रहा था, उसने वचन दे दिया. बौने ने एक बार फिर सारी सूखी घास कात कर सोने में परिवर्तित कर दी.

अगली सुबह जब राजा आया तो उसने सब कुछ वैसा ही पाया जैसा चाहा था. उसने चक्कीवाले की सुंदर बेटी से विवाह कर लिया और वह लड़की रानी बन गई.

एक वर्ष बीत गया और रानी ने एक सुंदर लड़के को जन्म दिया. वह इतनी प्रसन्न थी कि उसने बौने के विषय में कुछ सोचा ही नहीं. लेकिन एक दिन अचानक वह उसके कमरे में प्रकट हो गया. “जो वचन तुमने मुझे दिया था अब वह पूरा करो,” उसने रानी से कहा.

रानी ने बौने से बहुत अनुनय की.

वह चाहे तो शिशु के बदले सारा शाही खजाना ले सकता था. लेकिन उसके निवेदन का बौने पर कोई प्रभाव न पड़ा. तब वह इतने ज़ोर से रोने लगी कि बौने को उस पर दया आ गई.

“मैं तुम्हें तीन दिन का समय देता हूँ,” बौने ने कहा. “अगर तीन दिनों के समाप्त होने से पहले तुम मेरा नाम जान जाती हो तो तुम अपना शिशु अपने पास रख सकती हो.”

सारी रात और सारा दिन रानी उन सब नामों को याद करती रही जो उसने कभी न कभी सुने थे.

उस शाम बौना फिर उसके पास आया. कैस्पर और मेल्कियोर और बल्थाज़र से शुरू कर रानी ने एक के बाद एक वह सब नाम उसे बताये जो उसे पता थे. लेकिन हर बार बौने ने कहा, “यह मेरा नाम नहीं है.”

अगले दिन रानी ने सेवकों को नगर में भेज कर नये नामों का पता लगवाया. और जब शाम के समय बौना आया तो जितने भी अनोखे और विचित्र नाम उसने सुने थे उसे बताये. उसने कहा, बीस्टिरिब्स और लेग ओरेम और स्ट्रिंग बोंस – लेकिन उसका एक ही उत्तर था, “यह मेरा नाम नहीं है.”

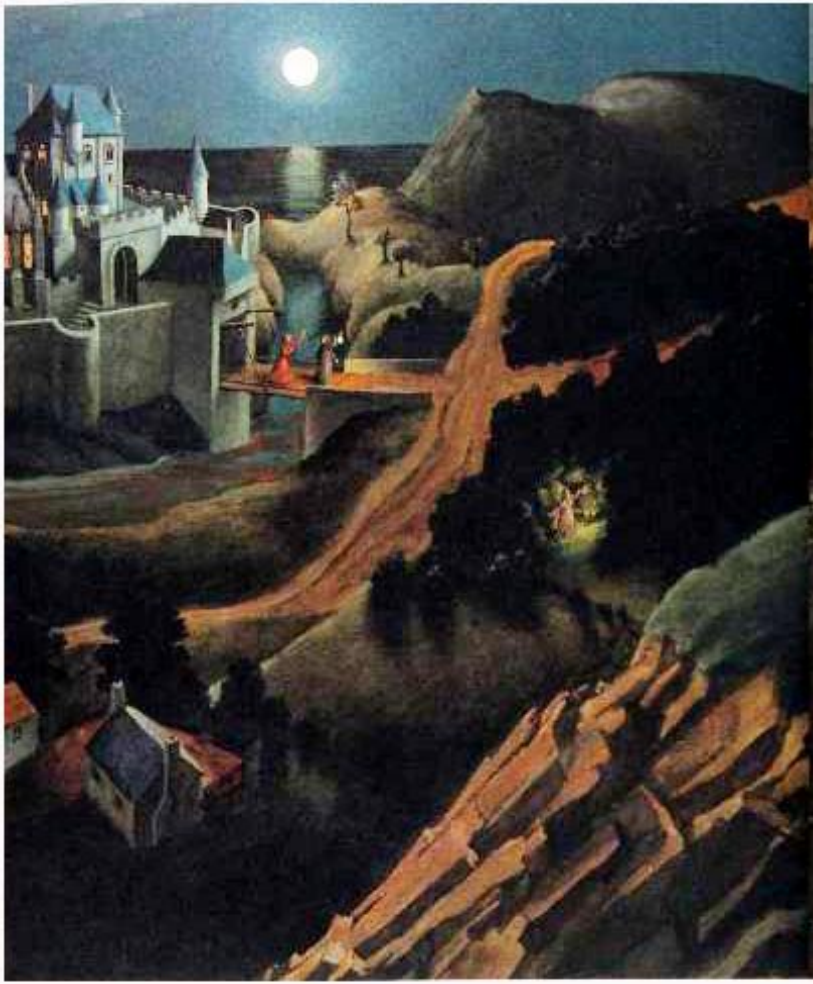

अब रानी बहुत ही भयभीत हो गई. उसने अपनी सबसे विश्वस्त सेविका को उस बौने की तलाश में वन के अंदर भेजा.

सेविका ने वन के अंदर झाड़ियों और खुले मैदान में उस बौने को ढूँढा. आखिरकार एक पहाड़ी के ऊपर स्थित एक घर में उसने बौने को ढूँढ़ निकाला.

एक कलछी में बैठा बौना एक बड़ी आग के चारों ओर उड़ता चक्कर लगा रहा था. वह ऊंची आवाज़ में गाने लगा:

'मैं बनाता अपनी बियर और पकाता अपनी रोटी
और शीघ्र ही ले लूँगा रानी से मैं लड़का उसका
कितना भाग्यशाली हूँ! कोई नहीं जानता कि
रम्पलस्टिल्टस्किन तो नाम है मेरा.'

जितनी तेज़ी से वह चल सकती थी उतनी तेज़ी से सेविका वापस चल दी और दुपहर बाद वह महल के अंदर पहुँच गई. तुम अनुमान लगा सकते हो कि बौने का नाम जान कर रानी कितनी प्रसन्न हुई होगी.

उस दिन शाम के समय बौना आ पहुँचा. “अब रानी साहिबा,” उसने कहा, “क्या तुम मेरा नाम जानती हो या फिर मैं तुम्हारे लड़के को ले जाऊँ?”

तो रानी ने पूछा, “क्या तुम्हारा नाम विल है?”

“नहीं.”

क्या तुम्हारा नाम फिल है?”

“नहीं.”

“तो क्या तुम्हारा नाम रम्पलस्टिल्टस्किन है?”

“शैतान ने तुम्हें बताया! शैतान ने तुम्हें बताया!” रम्पलस्टिल्टस्किन चीखा. और गुस्से से भरा वह कूद कर अपनी कलछी में सवार हो गया और उड़कर खिड़की से बाहर चला गया.

और वह फिर कभी वहाँ दिखाई न दिया.